2 9:46 PM Page 1

rashtriyaswaroop1@gmai.com

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित | वर्ष : 14 अंक : 125 | कानपुर, रविवार 06 नवम्बर 2022 | नगर संस्करण | पृष्ठ 12 | मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

नगदी फायदे के लिए करें अलसी की वैज्ञानिक खेती : डॉ. नलिनी

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉ. डी.आर. सिंह के निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय की अलसी अभिजनक डॉ. नलिनी तिवारी ने किसान भाइयों हेतु अलसी की वैज्ञानिक खेती के बारे में एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि भारतीय अर्थव्यवस्था में क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से तिलहनी फसलें खाद्यान्न फसलों के बाद दूसरा महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। भारत में जलवायु की विभिन्नता के कारण कई तिलहनी फसलें उगाई जाती हैं। इन तिलहनी फसलों में राई एवं सरसों के बाद अलसी का प्रमुख स्थान है। अलसी एक प्रमुख रबी तिलहनी फसल है जिस का उत्पादन बीज एवं रेशा प्राप्त करने के लिए किया जाता है। हमारे देश की अलसी का कुल क्षेत्रफल 2.94 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 1.54 लाख टन एवं उत्पादकता 525 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है।उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल उत्पादन एवं उत्पादकता क्रमशः 0.32 लाख हेक्टेयर ,0.17 लाख टन एवं 531 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश में अलसी की खेती बुंदेलखंड क्षेत्र जालौन,हमीरपुर, बांदा, झांसी,ललितपुर एवं कानपुर नगर, कानपुर देहात, बस्ती,प्रयागराज, वाराणसी, मिर्जापुर आदि में सफलतापूर्वक की जाती है। उन्होंने बताया कि अलसी की खेती जैविक एवं अजैविक दोनों प्रकार से की जा सकती है।

इस समय अलसी की बुवाई का समय चल रहा है किसान भाई 20 नवंबर तक अलसी की बुवाई कर सकते हैं। किसान भाई इसे असिंचित, सिंचित दशा में अलसी के बीज की बुवाई कर दें। अलसी के बारे में गांधी जी ने कहा था कि जिस घर में अलसी का सेवन होता है वह घर निरोगी होता है। अलसी के बीज में तेल 40 से 45ब, प्रोटीन 21ब,खनिज 3ब, कार्बोहाइड्रेट 29ब,ऊर्जा 530 किलोग्राम कैलोरी, कैल्शियम 170 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम, लोहा 370 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम इसके अलावा कैरोटीन, थायमीन,राइबोफ्लेविन एवं नाएसीन भी होता है। उन्होंने बताया कि अलसी के छिलके में मुएसिटेड होता है जिससे सर्दी, जुखाम, खांसी एवं खराब में फायदा होता है। अलसी में लिगनेन नामक एंटीऑक्सीडेंट होता है जो कि एक प्लांट एस्ट्रोजन होता है।यह कैंसर रोधी होता है तथा ट्यूमर की ग्रोथ को रोकता है। अलसी के बीज में खाद्य रेशा भी होता हैद्य यह कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल कर हृदय घात रोकने एवं गठिया के निदान में उपयोगी हैद्य खिलाड़ियों के मांस पेशियों के खिंचाव एवं दर्द में भी अलसी के तेल का प्रयोग किया जाता है हमारे देश में अलसी की खेती मुख्य बीज से तेल प्राप्त करने के लिए की जाती हैद्य कुल तेल उत्पादन का 80ब भाग औद्योगिक कार्यों हेतु पेंट चमड़ा, छपाई, स्याही आदि के रूप में प्रयोग की जाती है बाकी 20ब तेल खाने में इस्तेमाल होता हैद्य बीज से तेल निकालने के बाद 18 से 20ब प्रोटीन व 3ब तेल बचता है जो कि जानवरों के लिए पौष्टिक एवं भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के भी काम आती हैद्य अलसी की दो उद्देश्य प्रजाति से रेशा प्राप्त किया जाता है यह रेशा मजबूत टिकाऊ एवं चमकदार होता है इससे मजबूत रस्सी एवं कपड़े बनाए जाते हैं चमकदार रेशा होने के कारण इसे सूती, रेशमी कपड़ों के साथ मिलाकर वस्त्र बनाए जाते हैंद्य इसके साथ ही इसका उपयोग फौज में विभिन्न कार्यों हेतु किया जाता हैद्य इसकी लकड़ी के टुकड़ों से लुगदी बनाकर अच्छी गुणवत्ता वाले कागज तैयार किए जाते हैं। विश्वविद्यालय ने अलसी की बीज वाली प्रजातियां एवं दो उद्देश्य प्रजातियां विकसित की गई हैंद्य किसान भाई इनका प्रयोग अपने खेत में करके अपनी आय को बढ़ा सकते हैं। उन्होंने किसान भाइयों को सलाह दी कि बीज उद्देश्य प्रजातियां इंदु, उमा, सूर्या, शेखर, अपर्णा, शीला, सुभ्रा, गरिमा आदि है जबकि दो उद्देश्य हेतु शिखा, रश्मि, पार्वती, रुचि, राजन एवं गौरव हैं।

नकदी फायदे के लिए करें, अलसी की वैज्ञानिक खेती: डॉ. नलिनी

अनिल मिश्रा (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में विश्व विद्यालय की अलसी अभिजनक डॉक्टर नलिनी तिवारी ने किसान भाइयों हेतु अलसी की वैज्ञानिक खेती के बारे में एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि भारतीय अर्थव्यवस्था में क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से तिलहनी फसलें खाद्यान्न फसलों के बाद दूसरा महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं भारत में जलवायु की विभिन्नता के कारण कई तिलहनी फसलें उगाई जाती हैं इन तिलहनी फसलों में राई एवं सरसों के बाद अलसी का प्रमुख स्थान है अलसी एक प्रमुख रवी तिलहनी फसल है जिस का उत्पादन बीज एवं रेशा प्राप्त करने के लिए किया जाता है डॉक्टर तिवारी ने बताया कि अलसी के क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से भारत का विश्व में क्रमशः तृतीय एवं पंचम स्थान है क्षेत्रफल में भारत का स्थान चीन के साथ एवं कनाडा व कजाकिस्तान के बाद आता है जबकि उत्पादन में कनाडा,कजाकिस्तान, चीन एवं यूएसए के बाद आता है हमारे देश की अलसी का कुल क्षेत्रफल 2.94 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 1.54 लाख टन एवं उत्पादकता 525 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल उत्पादन एवं उत्पादकता क्रमशरू 0.32 लाख हेक्टेयर, 0.17 लाख टन एवं 531 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश में अलसी की खेती बुंदेलखंड क्षेत्र जालौन, हमीरपुर, बांदा, झांसी, ललितपुर एवं कानपुर नगर, कानपुर देहात, बस्ती, प्रयागराज, वाराणसी, मिर्जापुर आदि में सफलतापूर्वक की जाती है उन्होंने बताया कि अलसी की खेती जैविक एवं अजैविक दोनों प्रकार से की जा सकती है। इस समय अलसी की बुवाई का समय चल रहा है किसान भाई 20 नवंबर तक अलसी की बुवाई कर सकते हैं। किसान भाई इसे असिंचित, सिंचित दशा में अलसी के बीज की बुवाई कर दें अलसी के बारे में गांधी जी ने कहा था कि जिस घर

में अलसी का सेवन होता है वह घर निरोगी होता है। अलसी के बीज में तेल 40 से 45%, प्रोटीन 21%,खनिज 3%, कार्बोहाइड्रेट 29%,ऊर्जा 530 किलोग्राम कैलोरी, कैल्शियम 170 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम, लोहा 370 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम इसके अलावा कैरोटीन, थायमीन, राइबोफ्लेविन एवं नाएसीन भी होता है उन्होंने बताया कि अलसी के छिलके में मुएसिटेड होता है जिससे सर्दी, जुखाम, खांसी एवं खराब में फायदा होता है अलसी में लिगनेन नामक एंटीऑक्सीडेंट होता है जो कि एक प्लांट एस्ट्रोजन होता है यह कैंसर रोधी होता है तथा ट्यूमर की ग्रोथ को रोकता है। अलसी के बीज में खाद्य रेशा भी होता है जिसके कारण कब्ज एवं शरीर के रक्त में शर्करा के स्तर को नियमित करने में सहायक एवं कोलेस्ट्रॉल को कम करने में सहायक होता है। अलसी से प्राप्त प्रोटीन में सभी एमिनो एसिड पाए जाते हैं इसके बीज में ओमेगा 3 एवं ओमेगा 6 वसा अम्ल भी होते हैं वउमहं–3 हमारे शरीर में संश्लेषित नहीं होता है अतः हमें अलसी खाकर इसकी आपूर्ति करनी पड़ती है ओमेगा 6 से बुद्धि एवं स्मरण शक्ति, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती हैस यह कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल कर हृदय घाट रोकने एवं गठिया के निदान में उपयोगी हैस खिलाड़ियों के मांस पेशियों के खिंचाव एवं दर्द में भी अलसी के तेल का प्रयोग किया जाता है हमारे देश में अलसी की खेती मुख्य बीज से तेल प्राप्त करने के लिए की जाती है कुल तेल उत्पादन का 80% भाग औद्योगिक कार्यों हेतु पेंट चमड़ा, छपाई, स्याही आदि के रूप में प्रयोग की जाती है बाकी 20% तेल खाने में इस्तेमाल होता हैस बीज से तेल निकालने के बाद 18 से 20% प्रोटीन व 3% तेल बचता है जो कि जानवरों के लिए पौष्टिक एवं भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के भी काम आती है अलसी की दो उद्देश्य प्रजाति से रेशा प्राप्त किया जाता है यह रेशा मजबूत टिकाऊ एवं चमकदार होता है इससे मजबूत रस्सी एवं कपड़े बनाए जाते हैं चमकदार रेशा होने के कारण इसे सूती, रेशमी कपड़ों के साथ मिलाकर वस्त्र बनाए जाते हैंस इसके साथ ही इसका उपयोग फौज में विभिन्न कार्यों हेतु किया जाता हैस इसकी लकड़ी के टुकड़ों से लुगदी बनाकर अच्छी गुणवत्ता वाले कागज तैयार किए जाते हैं। विश्वविद्यालय ने अलसी की बीज वाली प्रजातियां एवं दो उद्देश्य प्रजातियां विकसित की गई हैंस किसान भाई इनका प्रयोग अपने खेत में करके अपनी आय को पढ़ा सकते हैं। उन्होंने किसान भाइयों को सलाह दी कि बीज उद्देश्य प्रजातियां इंदु,उमा, सूर्या, शेखर, अपर्णा, शीला, सुभ्रा, गरिमा, आदि है जबकि दो उद्देश्य हेतु शिखा, रश्मि, पार्वती, रुचि, राजन एवं गौरव हैं।

नकदी फायदे के लिए करें अलसी की वैज्ञानिक खेतीः नलिनी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश केक्रम में आज विश्वविद्यालय की अलसी अभिजनक डॉक्टर नलिनी तिवारी ने किसान भाइयों हेतु अलसी की वैज्ञानिक खेती के बारे में एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि भारतीय अर्थव्यवस्था में क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से तिलहनी फसलें खाद्यान्न फसलों के बाद दूसरा महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। भारत में जलवायु की विभिन्नता के कारण कई तिलहनी फसलें उगाई जाती हैं। इन तिलहनी फसलों में राई एवं सरसों के बाद अलसी का प्रमुख स्थान है। अलसी एक प्रमुख रबी तिलहनी फसल है जिस का उत्पादन बीज एवं रेशा प्राप्त करने के लिए किया जाता है। डॉक्टर तिवारी ने बताया कि अलसी के क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से भारत का विश्व में क्रमशः तृतीय एवं पंचम स्थान है क्षेत्रफल में भारत का स्थान चीन के साथ एवं कनाडा व कजाकिस्तान के बाद आता है। जबकि उत्पादन में कनाडा,कजाकिस्तान, चीन एवं यूएसए के बाद आता है। हमारे देश की अलसी का कुल क्षेत्रफल 2.94 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 1.54 लाख टन एवं उत्पादकता 525 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है।उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल उत्पादन एवं उत्पादकता क्रमशः 0.32 लाख हेक्टेयर ,0.17 लाख टन एवं 531 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश में अलसी की खेती बुंदेलखंड क्षेत्र जालौन,हमीरपुर, बांदा, झांसी,ललितपुर एवं कानपुर नगर, कानपुर देहात, बस्ती,प्रयागराज, वाराणसी, मिर्जापुर आदि में सफलतापूर्वक की जाती है। उन्होंने बताया कि अलसी की खेती जैविक एवं अजैविक दोनों प्रकार से की जा सकती है। इस समय अलसी की बुवाई का समय चल रहा है किसान भाई 20 नवंबर तक अलसी की बुवाई कर सकते हैं। किसान भाई इसे असिंचित, सिंचित दशा में अलसी के बीज की बुवाई कर दें। अलसी के बारे में गांधी जी ने कहा था कि जिस घर में अलसी का सेवन होता है वह घर निरोगी होता है। अलसी के बीज में तेल 40 से 45 प्रतिशत, प्रोटीन 21प्रतिशत,खनिज 3प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट 29प्रतिशत,ऊर्जा 530 किलोग्राम कैलोरी, कैल्शियम 170 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम, लोहा 370 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम इसके अलावा कैरोटीन, थायमीन,राइबोफ्लेविन एवं नाएसीन भी होता है। उन्होंने बताया कि अलसी के छिलके में म्युएसिटेड होता है जिससे सर्दी, जुखाम,खांसी एवं खराब में फायदा होता है। अलसी में लिगनेन नामक एंटीऑक्सीडेंट होता है जो कि एक प्लांट एस्ट्रोजन होता है यह कैंसर रोधी होता है तथा ट्यूमर की ग्रोथ को रोकता है। अलसी के बीज में खाद्य रेशा भी होता है जिसके कारण कब्ज एवं शरीर के रक्त में शर्करा के स्तर को नियमित करने में सहायक एवं कोलेस्ट्रॉल को कम करने में सहायक होता है। अलसी से प्राप्त प्रोटीन में सभी एमिनो एसिड पाए जाते हैं इसके बीज में ओमेगा 3 एवं ओमेगा 6 वसा अम्ल भी होते हैं omega-3 हमारे शरीर में संश्लेषित नहीं होता है अतः हमें अलसी खाकर इसकी आपूर्ति करनी पड़ती है ओमेगा 6 से बुद्धि एवं स्मरण शक्ति, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती हैद्य यह कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल कर हृदय घाट रोकने एवं गठिया के निदान में उपयोगी है। खलाड़ियों के मांस पेशियों के खिंचाव एवं दर्द में भी अलसी के तेल का प्रयोग किया जाता है हमारे देश में अलसी की खेती मुख्य बीज से तेल प्राप्त करने के लिए की जाती है। कुल तेल उत्पादन का 80 प्रतिशत भाग औद्योगिक कार्यों हेतु पेंट चमड़ा, छपाई, स्याही आदि के रूप में प्रयोग की जाती है बाकी 20प्रतिशत तेल खाने में इस्तेमाल होता है। बीज से तेल निकालने के बाद 18 से 20 प्रतिशत प्रोटीन व 3 प्रतिशत तेल बचता है जो कि जानवरों के लिए पौष्टिक एवं भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के भी काम आती है। अलसी की दो उद्देश्य प्रजाति से रेशा प्राप्त किया जाता है यह रेशा मजबूत टिकाऊ एवं चमकदार होता है इससे मजबूत रस्सी एवं कपड़े बनाए जाते हैं चमकदार रेशा होने के कारण इसे सूती, रेशमी कपड़ों के साथ मिलाकर वस्त्र बनाए जाते हैं। इसके साथ ही इसका उपयोग फौज में विभिन्न कार्यों हेतु किया जाता हैद्य इसकी लकड़ी के टुकड़ों से लुगदी बनाकर अच्छी गुणवत्ता वाले कागज तैयार किए जाते हैं। विश्वविद्यालय ने अलसी की बीज वाली प्रजातियां एवं दो उद्देश्य प्रजातियां विकसित की गई हैं। किसान भाई इनका प्रयोग अपने खेत में करके अपनी आय को पढ़ा सकते हैं। उन्होंने किसान भाइयों को सलाह दी कि बीज उद्देश्य प्रजातियां इंदु,उमा, सूर्या, शेखर,अपर्णा,शीला, सुभ्रा, गरिमा,आदि है जबकि दो उद्देश्य हेतु शिखा, रश्मि, पार्वती, रुचि, राजन एवं गौरव हैं।

06 nov 2022_jan express.pdf

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

हिमाचल में कांग्रेस पर बरसे मोदी... 12

आरएसएस गुरुकुल अकादमी में प्रतिभा की धनी... 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्ष: 14 | अंक: 26
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
रविवार | 06 नवम्बर, 2022

छात्र-छात्राओं को दी पाठ्यक्रमों की जानकारी

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग में शनिवार को नवागंतुक परास्नातक एवं शोध छात्र छात्राओं के लिए एक दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम हुआ। विभागाध्यक्ष डॉ. आर.के. यादव ने छात्र-छात्राओं को पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि परास्नातक छात्र-छात्राओं को फुल 70 क्रेडिट पढ़ना होगा जिसमें 40 क्रेडिट कोर्स एवं 30 क्रेडिट थीसिस कार्य करना है तथा पीएचडी के छात्र-छात्राओं को 100 क्रेडिट पढ़ना होगा। जिसमें 25 क्रेडिट कोर्स एवं 75 क्रेडिट थीसिस के होंगे। इस अवसर पर नव आगंतुक छात्र छात्राओं के विषयों से संबंधित विभिन्न शंकाओं का शिक्षकों द्वारा समाधान किया गया। कार्यक्रम में अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. धर्मराज सिंह, डॉ. मनोज कटियार, डॉ. श्वेता यादव, डॉ. महक सिंह, डॉ. नलिनी तिवारी मौजूद रहे।

2 9:46 PM Page 1
rashtriyaswaroop1@gmail.com
कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 14 अंक : 125 कानपुर, रविवार 06 नवम्बर 2022 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए
राष्ट्रीय स्वरूप

परास्नातक एवं शोध छात्र छात्राओं का हुआ ओरिएंटेशन

कानपुर । सीएसए के अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग में आज नवागंतुक परास्नातक एवं शोध छात्र छात्राओं हेतु एक दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम संपन्न हुआ।

विभागाध्यक्ष डॉ आरके यादव ने छात्र-छात्राओं को पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रमों के बारे में विस्तार से छात्र छात्राओं को विस्तार से जानकारी दी। इस कार्यक्रम में उन्होंने बताया कि परास्नातक छात्र-छात्राओं को फुल 70 क्रेडिट पढ़ना होगा जिसमें 40 क्रेडिट कोर्स एवं 30 क्रेडिट थीसिस कार्य करना है। इसी प्रकार से उन्होंने पीएचडी के छात्र छात्राओं को बताया कि उन्हें 100 क्रेडिट पढ़ना होगा जिसमें 25 क्रेडिट कोर्स एवं 75 क्रेडिट थीसिस के होंगे।

इस अवसर पर नव आगंतुक छात्र छात्राओं के विषयों से संबंधित विभिन्न शंकाओं का शिक्षकों द्वारा समाधान किया गया। इस अवसर पर अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉक्टर धर्मराज सिंह, डॉ मनोज कटियार, डॉक्टर श्वेता यादव, डॉक्टर महक सिंह, डॉक्टर नलिनी तिवारी, डॉक्टर गीता राय, डॉक्टर संजय सिंह, संजय पाठक एवं विवेकानंद यादव सहित अन्य शिक्षक एवं अधिकारी उपस्थित रहे।

अमर उजाला 06/11/2022

नवागत छात्रों को कोर्स संबंधी जानकारी दी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग में शनिवार को परास्नातक और शोध के नवागत छात्रों का ओरिएंटेशन कार्यक्रम हुआ। विभागाध्यक्ष डॉ. आरके यादव ने बताया कि परास्नातक छात्रों को फुल 70 क्रेडिट पढ़ना होगा, जिसमें 40 क्रेडिट कोर्स और 30 क्रेडिट थीसिस के होंगे। पीएचडी के छात्रों को 100 क्रेडिट पढ़ना होगा, जिसमें 25 क्रेडिट कोर्स और 75 क्रेडिट थीसिस के होंगे। इस मौके पर डॉ. धर्मराज सिंह, डॉ. नलिनी तिवारी, डॉ. गीता राय, डॉ. संजय सिंह, संजय पाठक आदि मौजूद रहे। (संवाद)

gram nov 6.pdf

(हिन्दी दैनिक) R.N.I. No. Utthin/2018/76731

(गांव देहात की खबर, शहर पर भी नजर)

दि ग्राम टुडे

उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश से एक साथ प्रसारित

वर्ष : 04 अंक : 311 देहरादून, रविवार, 6 नवम्बर 2022 मूल्य : 1 रुपये पृष्ठ - 8

नगदी फायदे के लिए करें, अलसी की वैज्ञानिक खेती... डॉक्टर नलिनी तिवारी

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज विश्व विद्यालय की अलसी अभिजनक डॉक्टर नलिनी तिवारी ने किसान भाइयों हेतु अलसी की वैज्ञानिक खेती के बारे में एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि भारतीय अर्थव्यवस्था में क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से तिलहनी फसलें खाद्यान्न फसलों के बाद दूसरा महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भारत में जलवायु की विविधता के कारण कई तिलहनी फसलें उगाई जाती है। इन तिलहनी फसलों में राई एवं सरसों के बाद अलसी का प्रमुख स्थान है। अलसी एक प्रमुख रबी तिलहनी फसल है जिस का उत्पादन बीज एवं रेशा प्राप्त करने के लिए किया जाता है। डॉक्टर तिवारी ने बताया कि अलसी के क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से भारत का विश्व में क्रमशः तृतीय एवं पंचम स्थान है क्षेत्रफल में भारत का स्थान चीन के साथ एवं कनाडा व कजाकिस्तान के बाद आता है। जबकि उत्पादन में कनाडा,कजाकिस्तान, चीन एवं यूएसए के

बाद आता है। हमारे देश की अलसी का कुल क्षेत्रफल 2.94 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 1.54 लाख टन एवं उत्पादकता 525 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है।उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल उत्पादन एवं उत्पादकता क्रमशः 0.32 लाख हेक्टेयर ,0.17 लाख टन एवं 531 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश में अलसी की खेती बुंदेलखंड क्षेत्र जालौन,हमीरपुर, बांदा, झांसी,ललितपुर एवं कानपुर नगर, कानपुर देहात, बस्ती,प्रयागराज, वाराणसी, मिर्जापुर आदि में सफलतापूर्वक की जाती है। उन्होंने बताया कि अलसी की खेती सिंचित एवं असिंचित दोनों प्रकार से की जा सकती है। इस समय अलसी की बुवाई का समय चल रहा है किसान भाई 20 नवंबर तक अलसी की बुवाई कर सकते है। किसान भाई इसे असिंचित, सिंचित दशा में अलसी के बीज की बुवाई कर दें।

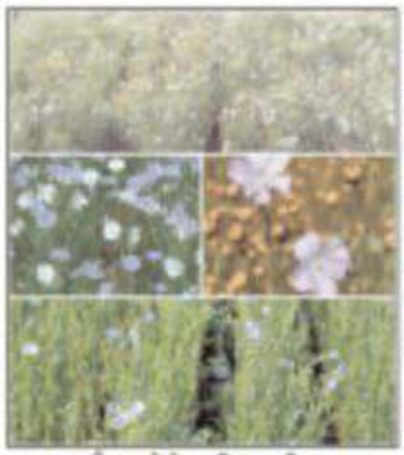

अलसी के बारे में गांधी जी ने कहा था कि जिस घर में अलसी का सेवन होता है वह घर निरोगी होता है। अलसी के बीज में तेल 40 से 45%, प्रोटीन 21%,खनिज 3%, कार्बोहाइड्रेट 29%,ऊर्जा 530 किलोग्राम कैलोरी, कैल्शियम 170 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम, लोहा 370 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम इसके अलावा कैरोटीन, थायमीन,राइबोफ्लेविन एवं नायसीन भी होता है। उन्होंने बताया कि अलसी के छिलके में म्यूसिलेज होता है जिससे सर्दी, जुकाम,खांसी एवं दमा में फायदा होता है। अलसी में लिगनेन नामक एंटीऑक्सीडेंट होता है जो कि एक प्लांट एस्ट्रोजन होता है यह कैंसर रोधी होता है तथा ट्यूमर की ग्रोथ को रोकता है। अलसी के बीज में घुलनशील रेशा भी होता है जिसके कारण कब्ज एवं शरीर के रक्त में शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में सहायक एवं कोलेस्ट्रॉल को कम करने में सहायक होता है। अलसी से प्राप्त प्रोटीन में सभी एमिनो एसिड पाए जाते हैं इसके बीज में ओमेगा 3 एवं ओमेगा 6 वसा अम्ल भी होते हैं माइटाकू-3 हमारे शरीर में संश्लेषित नहीं होता है अतः हमें अलसी खाकर इसकी आपूर्ति करनी पड़ती है ओमेगा 6 से बुद्धि एवं स्मरण शक्ति, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यह कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल कर हृदय घात रोकने एवं गठिया के निदान में उपयोगी है। शिकायतियों के मांस पेशियों के खिंचाव एवं दर्द में भी अलसी के तेल का प्रयोग किया जाता है हमारे देश में अलसी की खेती मुख्य बीज से तेल प्राप्त करने के लिए की जाती है। कुल तेल उत्पादन का 80% भाग औद्योगिक कार्यों हेतु पेंट वार्निश, छपाई, स्याही आदि के रूप में प्रयोग की जाती है बाकी 20% तेल खाने में इस्तेमाल होता है। बीज से तेल निकालने के बाद 18 से 20% प्रोटीन व 3% तेल बचता है जो कि जानवरों के लिए पौष्टिक एवं भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के भी काम आती है। अलसी की दो उद्देश्य प्रजाति से रेशा प्राप्त किया जाता है यह रेशा मजबूत टिकाऊ एवं चमकदार होता है इससे मजबूत रस्सी एवं कपड़े बनाए जाते हैं चमकदार रेशा होने के कारण इसे सूती, रेशमी कपड़ों के साथ मिलाकर वस्त्र बनाए जाते है। इसके साथ ही इसका उपयोग फौज में विभिन्न कार्यों हेतु किया जाता है। इसकी लकड़ी के टुकड़ों से लुगदी बनाकर अच्छी गुणवत्ता वाले कागज तैयार किए जाते है। विश्वविद्यालय ने अलसी की बीज वाली प्रजातियां एवं दो उद्देश्य प्रजातियां विकसित की गई है। किसान भाई इनका प्रयोग अपने खेत में करके अपनी आय को बढ़ा सकते है। उन्होंने किसान भाइयों को सलाह दी कि बीज उद्देश्य प्रजातियां इंदु,उमा, सूर्या, शेखर, अपर्णा,शीला, सुधा,गरिमा,आदि है जबकि दो उद्देश्य हेतु शिखा, रश्मि, पार्वती, रुचि, राजन एवं गौरव है।

5:03 PM
05 Nov dt.RR.pdf

4 कानपुर न्यूज

कानपुर, शनिवार, 5 नवंबर 2022

सीएसए में आजाद अगेता खीरा विकसित

▸ करीब डेढ़ दशक पहले चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में खीरा की एक प्रजाति और विकसित की गई थी

डी टी एन एन। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में करीब डेढ़ दशक पहले खीरे की कल्याण हरा प्रजाति विकसित की गई थी । अब दूसरी प्रजाति आजाद अगेता खीरा विकसित की गई है यह प्रजाति डॉक्टर डीपी सिंह के नेतृत्व में विकसित की गई जिसमें कई कृषि वैज्ञानिकों ने कम किया है। चंद्रशेखर आजाद कश्मीर प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के शाक भाजी अनुसंधान केंद्र में अभी तक 55 प्रजातियां विकसित की गई हैं जिसमें की खीरे की है दूसरी प्रजाति है ।

राज्य बीज उप समिति ने किया विमोचित

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के सब्जी उत्कृष्टता केंद्र द्वारा खीरे की आजाद अगेता खीरा नवीन प्रजाति विकसित की गई है। सब्जी अनुभाग कल्याणपुर के अनुभाग अध्यक्ष डॉ डीपी सिंह ने बताया कि कुलपति डॉ डीआर सिंह के कुशल मार्गदर्शन एवं नेतृत्व के परिणाम स्वरूप सब्जी अनुभाग में विगत 15 वर्षों बाद खीरे की नवीन प्रजाति विकसित हुई है उन्होंने बताया कि राज्य बीज उपसमिति (औद्यानिक फसलें) की 12वीं बैठक अपर मुख्य सचिव उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग उत्तर प्रदेश शासन की अध्यक्षता में 28 अक्टूबर 2022 को खीरे की नवीन प्रजाति आजाद अगेता खीरा को विमोचित किया गया।

एक हेक्टेयर में ढाई सौ कुंतल उत्पादन होगा

डॉ सिंह ने नवीन खीरे की प्रजाति की विशेषता के बारे में बताया कि इसमें फसल बुवाई के 35 से 35 दिन बाद पहली तुड़ाई शुरू हो जाती है तथा 60 दिनों में लगभग फसल पूर्ण हो जाती है जो कि अन्य प्रजातियों की अपेक्षा यह अगेती है।उन्होंने बताया कि इनके फलों का आकार मध्यम तथा औसत वजन 230 से 240 ग्राम के मध्य तथा पौधों की लंबाई लगभग 2 मीटर होती है।पौधों की कम लंबाई होने के कारण अन्य प्रजातियों की तुलना में लगभग 60अ फलों की संख्या अधिक होती है जिससे उत्पादन लगभग 250 कुंतल प्रति हेक्टेयर लिया जा सकता है।विभागाध्यक्ष डॉ डीपी सिंह ने कहा कि इस प्रजाति को विकसित करने में कृषि वैज्ञानिक डॉ राजीव, डॉक्टर के पी सिंह, डॉ एम आर डबास, डॉक्टर एच जी प्रकाश एवं डॉ एस पी सचान आदि की संयुक्त टीम ने विगत चार-पांच वर्षों के निरंतर शोधों के परिणाम स्वरूप विकसित की गई है।

करीब 4 से 5 साल लगा नई प्रजाति को विकसित करने में

डॉक्टर डीपी सिंह ने कहा खीरा की नई प्रजाति को विकसित करने में सेवानिवृत्ति शिक्षक एसपी सचान की भूमिका महत्वपूर्ण रही है उनके नेतृत्व में इस खीरे की प्रजाति को विकसित किया गया। उन्होंने कहा कि खीरे की यह प्रजाति ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु दोनों ही मौसम में उगा कर किसान अपनी आय में बढ़ोतरी कर स्वावलंबी बन सकते हैं। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान ने बताया कि खीरे की नई प्रजाति विकसित करने वाली कृषि वैज्ञानिकों की टीम को कुलपति ने बधाई एवं उनके उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाएं दी है।